हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८१६.१०८
पुस्तक संख्या नजी/म
क्रम संख्या १२४९

Section No. 16
Library No.
Date of Receipt 3/11/27

HINDUSTANI ACADEMY
Hindi Section
Library No. ...376....
Date 4/11/29

मजमूअ:नज़ीर ।

अर्थात्

नज़ीर के बनाये हुये सच्चे और नसीहत आमेज़ कलामों का संग्रह ।

जिस्को

लाला भोलानाथ ने सर्वसाधारण के चित्तविनोदार्थ संग्रह कर प्रकाशित किया ।

Hindustani Academy
FILE No. ....
Date ....

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९२ ई० ।

भूमिका।

बाज़: हो कि मियाँ नज़ीर एक अव्वल दर्जे के फ़क़ीर और आले दर्जे के शायर अकबराबाद में जिस्को आगरा भी कहते हैं तशरीफ़ रखते थे। इनकी बनाई हुई ऐसी ऐसी माकूल चीज़ें हैं कि अगर इन्सान उन्हें बउनवान शाइस्त: अज़ इब्तिदाय ता अख़ीर एक मरतबे देख जावे तो क्या मानी कि उसपर अमल कर अपनी आक़बत सुधारने व दुनिये के झगड़े बखेड़े से हट कर राहेरास्ती पर चलने के फ़िक्र में मुसतैद और सरगर्म न हो। मगर अफ़सोस कि फ़ारसी में क़ुपने के बजह से शायक़ैन हिन्दी उसके लज़्ज़त मज़ामीन व फ़साहत कलाम से बिल्कुल महरूम हैं। बाज़ शख़्सों ने उनके चन्द कलाम अपने किसी संग्रह की हुई किताबों में दर्ज भी किये हैं तो वे इस क़दर थोड़े हैं कि नाज़िरैन हिन्दी उन्हें देख कर जो बाक़ई में जौहर बेबहा हैं और ज़ियाद:

कलामों के देखने को लट्टू हो जाते हैं मगर हिन्दी में दस्तयाब न होने के वजह से मायूस हो रहते हैं।

बईं लिहाज़ अपने कई एक रफ़ीक़ों के तक़ाज़ाय रोज़मर्रा व मियाँ नज़ीर की रास्त-गोई हर ख़ासोआम पर ज़ाहर होने के लिये उन्की चन्द नसीहत आमेज़ बातें जो मेरी अक़्ल नाक़िस में बेहतर मालूम हुईं इन्तख़ाब कर यह मजमूअः नज़ीर नामी किताब एक हिस्से में तैयार की है। अब इसके शायक़ैन से यह इल्तिमास है कि अगर यह मेरी मेहनत और मशक़्क़त आपलोगों के दिलपसन्द होने और मेरे समुद्र में ग़ोता लगा मोती बाहर लाने का बायस हो तो बराह तवज्जह इसके जूद सफ़ होने की कोशिश हत्तलमक़दूर फ़र्माकर दूसरे हिस्से के तैयार करने की रग़बत दिलावें।

संग्रहकर्ता

लाला भोलानाथ।

मजमूअःनज़ीर ।

पहिला भाग ।

ख़ुशामद के बयान में ।

दिल ख़ुशामद से हर इक शख़्स का क्या राज़ी है।
आदमी जिन परी औ भूत बला राज़ी है ॥
भाई फ़र्ज़न्द भी ख़ुश बाप चचा राज़ी है ।
शाह मसरूर ग़नी शाहो गदा राज़ी है ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उस्से सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
अपना मतलब हो तो मतलब की ख़ुशामद कीजै
और नहीं काम तो उस ढब की ख़ुशामद कीजै ॥
औलिया अम्बिया औ रब की ख़ुशामद कीजै ।
अपने मक़दूर ग़रज़ सबकी ख़ुशामद कीजै ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उस्से सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
चारदिन जिस्को ख़ुशामद से किया झुक के सलाम।
वह भी ख़ुश होगया अपना भी हुआ काममेंकाम ॥

बड़े आक़िल बड़े दाना ने निकाला है यह दाम ।
ख़ूब देखा तो ख़ुशामद ही की आमद है तमाम ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
प्यार से जोड़ दिये जिसकी तरफ़ हाथ जो आह ।
वहीं ख़ुश होगया करतेही वह हाथों प निगाह ॥
ग़ौर से हमने है इस बात को देखा वल्लाह ।
कि ख़ुशामद से मिली लोगों को है इज़्ज़ व जाह ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
ऐश करते हैं वही जिन्का ख़ुशामद का मिज़ाज ।
जो नहीं करते वह रहते हैं हमेशा मोहताज ॥
हाथ आता है ख़ुशामद से मकाँ मुल्क औ ताज ।
क्याही तासीर की इस नुस्ख़े ने पाई है रवाज ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
ख़ूब देखा तो ख़ुशामद की बड़ी खेती है ।
ग़ैर क्या अपनेहीं घरबीच यह सुख देती है ॥

मा ख़ुशामद की सबब छाती लगा लेती है ।
नानी दादी भी ख़ुशामद से दुआ देती है ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
बीबी कहती है मियाँ तेरे मैं सदक़े जाऊँ ।
सास बोले कहीं मत जा तेरे सदक़े जाऊँ ॥
ख़ाला कहती है कि कुछ खा तेरे सदक़े जाऊँ ।
साली कहती है कि भैया तेरे सदक़े जाऊँ ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
आ पड़ा है जो ख़ुशामद से सरोकार उसे ।
ढूंढ़ते फिरते हैं उल्फ़त के ख़रीदार उसे ॥
आशना मिलते हैं औ चाहे हैं सब यार उसे ।
अपने बेगाने ग़रज़ करते हैं सब प्यार उसे ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
रूखी औ रोग़नी आबी की ख़ुशामद कीजै ।
नानबाई औ कबाबी की ख़ुशामद कीजै ॥

साक़ी औ जाम शराबी की ख़ुशामद कीजे ।
पारसा रिन्द ख़राबी की ख़ुशामद कीजे ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥
मर्दोंज़न तिफ़्लो जेवाँ ख़ुर्दो कलाँ पीरो फ़क़ीर ।
जितने आलम में हैं मुहताजो गदा शाहो वज़ीर॥
सबके दिल होते हैं फन्दे में ख़ुशामद के असीर ।
तू बड़ी बात यह कहता है गा वल्लाहे नज़ीर ॥
जो ख़ुशामद करै ख़ल्क़ उसे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥

मुफ़्लिसी के बयान में ।

जब आदमी के हाल प आती है मुफ़्लिसी ।
किस २ तरह से उसको सताती है मुफ़्लिसी ॥
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़्लिसी ।
भूखा तमाम रात सुलाती है मुफ़्लिसी ॥
यह दुख वह जाने जिस्प कि आती है मुफ़्लिसी॥
कहिये तो अब हकीम की सब से बड़ी है शाँ ।
ताज़ीम जिसकी करते हैं नौवाब और ख़ाँ ॥

मुफ़्लिस हुये तो हज़रते लुक़्मान क्या हैं याँ।
ईसा भी हो तो कोई नहीं पूछता मियाँ ॥
हिक्मत हकीम की भी डुबाती है मुफ़्लिसी ॥
जो अल्ले फ़ज़ल आलिमो फ़ाज़िल कहाते हैं ।
मुफ़्लिस हुये तो कल्मः तलक भूल जाते हैं ॥
पूछे कोई अलिफ़ तो उसे बे बताते हैं ।
वह जो ग़रीब ग़ुरबे के लड़के पढ़ाते हैं ॥
उनकी तो उम्र भर नहीं जाती है मुफ़्लिसी ॥
मुफ़्लिस कहे जो आनके मजलिस के बीच हाल
सब जानै रोटियों का यह डालाहै इसने जाल ॥
गर गिर पड़े तो कोई न लेवे उसे सँभाल ।
मुफ़्लिस में होवें लाख अगर इल्म औ कमाल ॥
सब ख़ाक बीच आके मिलाती है मुफ़्लिसी ॥
जब रोटियों के बटने का आकर पड़े शुमार ।
मुफ़्लिस को देवें एक तवंगर को चार चार ॥
गर और माँगे वह तो झिड़कते हैं बार बार ।
इस मुफ़्लिसी का आह बयाँ क्या करूं मैं यार॥
मुफ़्लिस को उस जगह भी चपाती है मुफ़्लिसी॥

मुफ़्लिसकी कुछ नज़र नहीं रहती है आनपर ।
देता है अपनी जान वह एक एक नान पर ॥
हर आन टूट पड़ता है रोटी के ख़्वान पर ।
जिस तर्ह कुत्ते लड़ते हैं इक उस्तख़्वान पर ॥
वैसाही मुफ़्लिसों को लड़ाती है मुफ़्लिसी ॥
करता नहीं हया से जो कोई वह काम आह ।
मुफ़्लिस करे है उसके तईं इन्सराम आह ॥
समझे न कुछ हलाल न जाने हराम आह ।
कहते हैं जिसको शर्मो हया नंगोनाम आह ॥
वह सब हया व शर्म उड़ाती है मुफ़्लिसी ॥२॥
यह मुफ़्लिसी वह शै है कि जिस घरमें भरगई।
सब चीज़ के यह मिलने को मुहताज कर गई॥
जन बच्चे रोते हैं गोया नानी गुज़र गई ।
हमसाया पूछते हैं कि क्या दादी मर गई ॥
बिन मुर्दे घरमें शोर मचाती है मुफ़्लिसी ॥
लाज़िम है गर ग़मी में कोई शोरोगुल मचाय ।
मुफ़्लिस बग़ैर ग़मकेही करता है हाय हाय ॥
मरजाय गर कोई तो कहाँ से उसे उठाय ।

इस मुफ़्लिसी की ख़्वारियाँ क्या२ कहूं मैं हाय॥
मुर्दे को बिन कफ़न के घिराती है मुफ़्लिसी॥
क्या २ मैं मुफ़्लिसी की कहूं ख़्वारी फकड़ियाँ।
झाड़ू बग़ैर घर में बिखरती हैं झकड़ियाँ ॥
कोने में जाले लेते हैं छप्पर में मकड़ियाँ ।
पैदा न होवें जिनके जलाने को लकड़ियाँ ॥
दरिया में उन्के मुर्दे बहाती है मुफ़्लिसी॥१०॥
बीवी की नथ न लड़कों के हाथों कड़े रहे ।
कपड़े मियाँ के बनियें के घर में अड़े रहे ॥
जब कड़ियाँ बिक गईं तो खँड़र में पड़े रहे ।
ज़ंजीर न केवाड़ न चक्कर कड़े रहे ॥
आख़िर को ईंट२ खुदाती है मुफ़्लिसी॥११॥
नक़ाश पर भी ज़ोर जब आ मुफ़्लिसी गिरे ।
सब रंग दम् में कर दे मुसौअर के किर्किरे ॥
सूरत भी उसकी देख के मुंह खींचना परे ।
तस्वीर और नक़्श में क्या रंग वह भरे ॥
उसके तो मुंह का रंग उड़ाती है मुफ़्लिसी ॥
जब खूबरू प आन के पड़ता है दिन सियाह ।

फिरता है दरबदर वह हरइक के ख़्वामख़्वाह ॥
हर्गिज़ किसीके दिलको नहीं होती उस्की चाह ।
गर हुस्न हो हज़ार रुपी का तो उस्को आह ॥
क्या कौड़ियों के मोल बिकाती है मुफ़्लिसी ॥
उस ख़ूबरू को कौन दे अब दाम औ दिरम ।
होवे जो कौड़ी २ प राज़ी वह दम्बदम ॥
कोई भी उस्पे करता नहीं है ज़रा रहम ।
क्योंकर न जीको उस चमने हुस्न को हो ग़म ॥
जिस्की बहार मुफ़्त लुटाती है मुफ़्लिसी ॥१४॥
आशिक़ के हाल पर भी जब आ मुफ़्लिसी परे ।
माशूक़ उसके दुख को न दिल में ज़रा धरे ॥
आवे जब उस्के पास तो वह देखि जरमरे ।
इस डर से यानी मुझसे न यह कुछ तलब करे ॥
तुहमत यह आशिकों को लगाती है मुफ़्लिसी ॥
कैसेही धूमधाम की रंडी हो ख़ुश्जमाल ।
जब मुफ़्लिसी का आनपड़े सिरपर उसके जाल ॥
देते हैं उसके नाच को ठट्ठे के बीच डाल ।
नाचे है वह तो फ़र्श के ऊपर क़दम सँभाल ।

और उसको उँगलियों प नचाती है मुफ़्लिसी ॥
उसका तो दिल ठेकाने नहीं भाव क्या बताय।
जब हो फटा दुपट्टा तो काहे से मुहँ छिपाय ॥
ले शाम से वह सुब्ह तलक गोकि नाचे गाय॥
औरों को आठ सात तो वह दो टकेही पाय ।
इस लाज से उसे भी लजाती है मुफ़्लिसी ॥
जिस कस्बी रंडी का हो हलाकत से दिलहुज़ीं।
रखता है उसको जब कोई आकर तमाशबीं ॥
इक पौन पैसे तक भी वह करतीं नहीं नहीं ।
यह दुख उसी से पूछिये अब आह जिस तईं ॥
लालच में सारीरात जगाती है मुफ़्लिसी ॥
वह तो यह समझे दिल में कि धेला जो पाउँगी।
दमड़ी के पान दमड़ी को मिस्सी मँगाउँगी ॥
बाक़ी रहे छदाम सो पानी भराउँगी ।
फिर दिलमें सोचती है कि क्या ख़ाक खाउँगी ॥
आख़िर चना उसी का भुनाती है मुफ़्लिसी ॥
जब मुफ़्लिसी से हावे कलावत का दिल उदास।
फिरता है ले तँबूरे को हर घरके आस पास ॥

इक पावसेर आटे की दिलमें लगा के आस ।
गौरी का वक्त होवे तो गाता है वह भभास ॥
ह्याँतक हवास उसकी उड़ाती है मुफ़्लिसी ॥
मुफ़्लिस जो व्याह बेटी का करता है बोल २ ।
पैसा कहाँ जो जाके वह लावे जहेज़ मोल ॥
जोरू का वह गला है कि फूटा हो जैसे ढोल ।
घरकी हलालख़ोरी तलक करती ठठोल ॥
हैबत तमाम उसकी उठाती है मुफ़्लिसी ॥
बेटे का व्याह हो तो न व्याही न साथी है ।
नहिं रोशनी न बाजे की आवाज़ आती है ॥
माँ पीछे एक मैली चदर ओढ़े जाती है ।
बेठा बना है दूलह तो बाबा बराती है ॥
मुफ़्लिस की यह बरात चढ़ आती है मुफ़्लिसी ॥
गर व्याह कर चला है सहर को तो यह बला ।
शोहदा ज़नाना हिजड़ा औ भाट मुंडचरा ।
खींचे हुये वह सब उसे जाते हैं जाबजा ॥
वह आगे २ लुढ़ता हुआ जाता है चला ।
औ पीछे थपोड़ियों को बजाती है मुफ़्लिसी ॥

दरवाज़े पर ज़नाने बजाते हैं तालियाँ ।
औ घरमें बैठी डोमिनी देती है गालियाँ ॥
मालिन गले की हार हो दौड़े ले डालियाँ ।
सिक्का खड़ा सुनाता है बातें रज़ालियाँ ॥
यह ख़्वारी यह ख़राबी दिखाती है मुफ़्लिसी ॥
कोइ शूम बेहया कोइ बोला निखट्टू है ।
बेटी ने जाना बाप तो मेरा निखट्टू है ॥
बेटे पुकारते हैं कि बाबा निखट्टू है ॥
बीबी यह दिल में कहती है भड़ुआ निखट्टू है ।
आख़िर निखट्टू नाम धराती है मुफ़्लिसी ॥
चूल्हा तवा न पानी के मटकी में आबी है ।
पीने को कुछ न खाने को औ न रिकाबी है ॥
मुफ़्लिस के साथ सब के तईं बेहिजाबी है ।
मुफ़्लिस की जोरू सच है कि हाँ सबकी भाबी ॥
इज़्ज़त सब उसके दिलकी गँवाती है मुफ़्लिसी ॥
कैसाही आदमी हो पर अफ़्लास की तुफ़ैल ।
कोइ गदहा कहे उसे कोइ कहता है पूरा बैल ॥
कपड़े फटे तमाम बढ़े बाल फैल फैल ।
मुंह खुश्क दाँत ज़र्द बदन पर जमाये मैल ॥

सब शक्ल क़ैदियों की बनाती है मुफ़्लिसी ॥
हर आन दोस्तों की मुहब्बत घटाती है ।
जो आशना हैं उनकी तो उल्फ़त घटाती है ॥
अपने व ग़ैर की भी यह चाहत घटाती है ।
शर्मो हया व इज़्ज़तो हुर्मत घटाती है ॥
नाख़ुन औ बाल सब यह बढ़ाती है मुफ़्लिसी ॥
जब मुफ़्लिसी हुई तो शराफ़त कहाँ रही ।
वह क़द्र ज़ात की वह निजाबत कहाँ रही ॥
कपड़े फटे तो लोगों में इज़्ज़त कहाँ रही ।
ताज़ीम औ तवाज़: की हुर्मत कहाँ रही ॥
मुफ़्लिस को जूतियों प बिठाती है मुफ़्लिसी ॥
रखती नहीं किसी के यह ग़ैरत के आनको ।
सब ख़ाक में मिलाती है हुर्मत के शानको ॥
सौ मेहनतों में उसके खपाती है जानको ।
चोरी प आके डाले है मुफ़्लिस के ध्यानको ॥
आख़िर निदान भीख मँगाती है मुफ़्लिसी ॥
दुनियाँ में लेके शाह से ऐ यारो ता फ़क़ीर ।
ख़ालिक़ न मुफ़्लिसी में किसी को करे असीर ॥

अशराफ़ को बनाती है इक आन में फ़कीर ।
क्या २ मैं मुफ़लिसी की ख़राबी कहूं नज़ीर ॥
वह जाने जिस्के दिलको जलाती है मुफ़लिसी ॥

आबरू और तन्दुरुस्ती के बयान में।

हैं मर्द अब वही कि जिन्हों का है फ़न् दुरुस्त।
हुर्मत उन्हीं के वास्ते जिन्का चलन् दुरुस्त ॥
रहता नहीं किसी का सदा माल धन् दुरुस्त।
दौलत रही किसी की न बाग़ो चमन् दुरुस्त ॥
जितने सख़ुन हैं सब में यही है सख़ुन दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ १ ॥
दुनियाँ में अब उन्हींके तईं कहिये पादशाह।
जिन्के बदन दुरुस्त हैं दिन रात सालो माह ॥
जिस पास तन्दुरुस्ती व हुर्मत की हो सिपाह।
ऐसी फिर और कौन सी दौलत है वाहवाह ॥
जितने सख़ुन हैं सब में यही है सख़ुन दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ २ ॥

गो घरमें अपने रातो दिन् हश्मत पनाही है ।
बिन तन्दुरुस्ती सब वह ख़राबी तबाही है ॥
यह तन्दुरुस्ती यारो बड़ी पादशाही है ।
सच पूछिये तो ऐन यह फ़ज़्ले इलाही है ॥
जितने सख़ुन हैं सब में यही है सख़ुन दुरुस्त॥
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ३ ॥
गर दौलतों से उसका भरा है तमाम घर ।
बीमार है तो ख़ाक से बदतर है सब वह ज़र॥
हो तनन्दुरुस्त गर्चे वह मुफ़्लिस हो सरबसर ।
फिर न किसी का ख़ौफ़ न हरगिज़ किसीका डर॥
जितने सख़ुन हैं सब में यही है सख़ुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ४ ॥
आजिज़ हो या फ़क़ीर हो पर तन्दुरुस्त हो ।
बेज़र हो या अमीर हो पर तन्दुरुस्त हो ॥
क़ैदी हो या असीर हो पर तन्दुरुस्त हो ।
मुफ़्लिस हो या गदा हो पर तन्दुरुस्त हो ॥
जितने सख़ुन हैं सब में यही है सख़ुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ५ ॥

हो तन्दुरुस्ती औ मिले हुर्मत से रोटियाँ ।
ऐसी फिर और कौन सी दौलत है अब यहाँ ॥
इसमें तमाम ख़त्म हैं आलम की खूबियाँ ।
क़िस्मत से दोनों मिलती हैं इन्सां को ए मियाँ
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ६ ॥
परवा नहीं अगर्चे लिखा या पढ़ा न हो ।
मुहताज हक़ सिवा यह किसी और का न हो॥
हुस्नो जमाली इल्मो हुनर गो मिला न हो ।
इक तन्दुरुस्ती चाहिये कुछ होवे या न हो ॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ७ ॥
बीमार गर्चे लाख तरह से हो पादशाह ।
तो उसको जानिये कि गदा से भी है तबाह ॥
हमतो उसी को शाह कहैं औ जहाँपनाह ।
अब जिसका तन दुरुस्त हो हुर्मत से हो निबाह॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ८ ॥

हो गर्चे लाख दौलतें बीमार के कने ।
औ न्यामतों के ढेर लगे हों बने ठने ॥
बेहतर है मुफ़्लिसी के मियाँ चाबने चने ।
जो तन्दुरुस्त हैं वही टूल्हा हैं औ बने ॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ९ ॥
जब तन्दुरुस्तियों की रहें दिल में बस्तियाँ ।
फिर सौ तरह के ऐश हैं औ मै परस्तियाँ ॥
खाने को होवें न्यामतें या फ़ाक़ा मस्तियाँ ।
सब ऐश औ मज़े हैं जो हों तन्दुरुस्तियाँ ॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ १० ॥
चाहा जो दिल नशे को तो फ़ौरन मँगा लिया ।
महबूब दिलबरों को गले से लगा लिया ॥
माँगा जो जीने उसको खुशी से उड़ा लिया ।
जो मिल गया सो पी लिया चाहा सो खा लिया॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ ११ ॥

आया जो दिल में सैरे चमन को चले गये ।
बाज़ार चौक सैर तमाशे में खुश हुये ॥
बैठे उठे खुशी से हरइक जा चले फिरे ।
जागे मज़े में रात को या खुश हो सो रहे ॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ १२ ॥
कुदरत से यह जो तन् की बनी है हर एक कल ।
जबतक यह कल बनी है तभीतक बड़ी है कल ॥
गर हो खुदानख्वास्त: इक कल भी चलबचल ।
फिर न खुशी न ऐश न कुछ ज़िन्दगी का फल ॥
जितने सखुन हैं सब में यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ १२ ॥
अदना हो या गरीब तवंगर हो या फ़कीर ।
या पादशाह शहर का या मुल्क का वज़ीर ॥
है सब को तन्दुरुस्ती व हुर्मतही दिलपज़ीर ।
जो तूने अब कहा सो यही सच है ऐ नज़ीर ॥
जितने सखुन हैं सब मे यही है सखुन दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥ १४ ॥

तथा ।

दुख की दौलत होती उस्को भी तबाही बूझिये।
सुख से रहना खल्क में खुशदस्तगाही बूझिये॥
रोशनी को ग़म के हर जा पर सियाही बूझिये।
सेहत औ हुर्मत को नित हश्मतपनाही बूझिये॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना पादशाही बूझिये ॥१॥
सेहत औ हुर्मत से गर अल्लाह ह्यां करदे निबाह।
इस बराबर कौनसी है फिर जहाँ में इज़्ज़ोजाह॥
अब जो हम इसबातके रुत्बे को करते हैं निगाह।
क्या किसी आक़लने यह नुक्ता कहा है वाहवाह॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना पादशाही बूझिये ॥२॥
इसके सब मुहताज हैं अब शाह से ले ताणदा ।
जिसे तन सालम रहे औ पेट हुर्मत से भरा ॥
आबरू औ तन्दुरुस्ती जिसको हक़ ने की अता।
फिर जहाँमे ऐसा यारो कौनसा है पादशा ॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग मे रहना पादशाही बूझिये ॥३॥

दौलतें जितनी हैं सब इन दौलतों से हैं तले।
आबरू अल्ला रखे और उम्र हुर्मत से कटे ॥
इज़्ज़तो हुर्मत बड़ी दौलत है अल्ला सब को दे।
हर घड़ी हर आन हर दम् खल्क़ में प्यारे मेरे ॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना पादशाही बूझिये ॥४॥
आबरू दुनियाँ में सारे मोती की सी आब है।
तन्दुरुस्ती और भी फिर ऐश का असबाब है ॥
जिस के हैं यह उसीका सब अदब आदाब है।
यह रहें औ ज़िन्दगी तो फिर ख़ियालो ख़ाब है॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना पादशाही बूझिये ॥५॥
हैं जहाँतक ख़ल्क़ में पीरो जवाँ ख़ुर्दो कबीर ।
आलिमो फ़ाज़िल गदा औ पादशह मीरो वज़ीर॥
क्या तवंगर क्या ग़नी क्या बेनवा औ क्या फ़क़ीर ।
सब जहाँ में हैं इसी नुक्ते के क़ायल ऐ नज़ीर ॥
तन्दुरुस्ती को निपट फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना पादशाही बूझिये ॥६॥

रोटियों के बयान में ।

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियाँ ।
फूले नहीं बदन में समाती हैं रोटियाँ ॥
आँखें परीरुखों से लड़ाती हैं रोटियाँ ।
सीने उपर भी हाथ चलाती हैं रोटियाँ ॥
जितने मज़े हैं सब यह दिखाती हैं रोटियाँ १
रोटी से जिसका नाक तलक पेट है भरा ।
करता फिरे है क्या वह उछल कूद जाबजा ॥
दीवार फाँद कर कोइ कोठा उछल गया ।
ठट्ठा हँसी शराब सनम साक़ी इस सिवा ॥
सौ २ तरह की धूम मचाती हैं रोटियाँ ॥ २ ॥
जिस जा प हाँड़ी चूल्हा तवा औ तनूर है ।
ख़ालिक़ के क़ुदरतों का उसी जा ज़हूर है ॥
चूल्हे के आगे आँच जो जलती हज़ूर है ।
जितने हैं नूर सब में यही ख़ास नूर है ॥
इस नूर के सबब नज़र आती हैं रोटियाँ ॥३॥
आवे तवे तनूर का जिस जा ज़ुबाँ प नाम ।
या चक्की चूल्हे का जहाँ गुलज़ार हो तमाम ॥

वाँ सर झुका के कीजिये डंडोत औ सलाम ।
इस वास्ते कि ख़ास यह रोटी के हैं मुक़ाम ॥
पहिले इसी मकानो में आती हैं रोटियाँ ॥४॥
इन रोटियों के नूर से पड़ता है सब ज़हूर ।
आटा नहीं है चलनी से छन २ गिरे है नूर ॥
पेड़ा हर एक इसका है बरफ़ी व मोतीचूर ।
हरगिज़ किसी तरह न बुझे पेट का तनूर ॥
इस आग को मगर यह बुझाती हैं रोटियाँ ॥५॥
पूछा किसी ने यह किसी कामिल फ़क़ीर से ।
सूरज औ चाँद हक़ ने बनाये हैं काहे के ॥
वह सुनके बोला बाबा ख़ुदा तुझ को ख़ैर दे ।
हम तो न चाँद समझें न सूरज हैं जानते ॥
बाबा हमें तो यह नज़र आती हैं रोटियाँ ॥६॥
रोटी जब आई पेट में सौ क़ैद खुल गये ।
गुलज़ार फूले आंखों में औ रंज कुल गये ॥
दो तर नेवाले पेट में जब आके ढुल गये ।
चौदह तबक़ के जितने थे सब भेद खुल गये ॥
यह कश्फ़ यह कमाल दिखाती हैं रोटियां ॥७॥

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो ।
मेले की सैर ख़ाहिशे बाग़ो चमन न हो ॥
भूखे ग़रीब दिल की ख़ुदा से लगन न हो ।
सच है कहा किसी ने कि भूखे भजन न हो ॥
अल्लाह को भी याद दिलाती हैं रोटियाँ ॥ ९ ॥
अब जिसके आगे मालपुये भरके थाल हैं ।
पूरे भगत वही हैं औ साहब के लाल हैं ॥
औ जिन्के आगे रोग़नी औ शीरमाल हैं ।
आरिफ़ वही हैं औ वही साहेब कमाल हैं ॥
पक्की पकाई अब जिन्हें आती हैं रोटियाँ ॥१०॥
कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते ।
लम्बे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते ॥
बाँधे कोई रुमाल है रोटी के वास्ते ।
सब कश्फ़ औ कमाल हैं रोटी के वास्ते ॥
जितने हैं रूप सब यह दिखाती हैं रोटियाँ ॥
रोटी से नाचे प्यादा क़वायद दिखादिखा ।
असवार नाचे घोड़े को कावा लगा लगा ॥
घुघुरू को बाँधे पीक भी फिरता है नाचता ।

और इस सिवा जो गौर से देखा तो जावजा ॥
सौ २ तरह की नाच दिखाती हैं रोटिया ॥ १२ ॥
रोटी के नाच तो हैं सभी ख़ल्क़ में बुरे ।
कुछ भँडुये भाँड़ही यह नहीं फिरते नाचते ॥
यह रंडियाँ जो नाचे हैं घूघट को मुहँ पे ले ।
घूघट न जानो दोस्तो ज़िन्हार तुम बूसे ।
इस परदे में यह अपनी कमाती हैं रोटियाँ ॥
दुनियाँ में अब बदी न कहीं औ निकोई है ।
या दुश्मनी व दोस्ती या तुन्दख़ोई है ॥
कोई किसी का और किसी का न कोई है ।
सब कोई है उसी का कि जिस हाथ डोई है ॥
नोकर नफ़र गुलाम बनाते हैं रोटियाँ ॥ १४ ॥
रोटी का अब अजल से हमारा तो है ख़मीर ।
रूखीही रोटी हक़ में हमारे तो शहदोशीर ॥
या पतली होवे मोटी ख़मीरी हो या पनीर ।
गेहूं जवार बाजरे की जैसी हो नजीर ॥
हमको तो सब तरह की ख़ुश आती हैं रोटियाँ ॥

—***—

चपातियों के बयान में।

जब मिली रोटी हमें सब नूर हक़ रोशन हुये।
रातोदिन शम्शोक़मर शामोशफ़क़ रोशन हुये॥
ज़िन्दगी के थे जो कुछ नज़्मोनसक़ रोशन हुये।
अपने बेगानों के लाज़िम थे जो हक़ रोशन हुये॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥
वह जो अब खातेहैं बाक़रख़ानी कुल्चःशीरमाल
हैं वह ख़ासुलख़ास दरगाहे करीमे ज़ुज्जलाल॥
यह जो रोटीदाल का रखतेहैं हम गर्दनमें जाल।
जब मिली रोटी वहीं हम होगये साहबकमाल॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये॥
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥
वह तो अब मर्दे ख़ुदा हैं कूत जिनका नूर है।
वह मलायक हैं वहां रोटी की क्या मज़कूर है॥
दिल हमारा तो फ़क़त रोटी का अब रंजूर है।
हम शिकमबन्दों का तो यारो यही दस्तूर है॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥

जब तलक रोटी का टुकड़ा हो न दस्तरख़ान पर।
नहिंनिमाज़ों में लगे दिल औनकुछकुरआनपर॥
रातोदिन रोटी चढ़ी रहती है सबके ध्यान पर।
क्या खुदा का नूर बरसे है पड़ा हर नान पर॥
दो चपाती के वरक़ मे सब वरक़ रोशन हुये।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥
गर न हों दो रोटियाँ और एक प्याला दालका।
खेल फिर बिखरा फिरे यों हालका औ क़ालका॥
जो न हो रोटी तो किस्का पीर किस्का बालका।
वस्फ़ किस मुंह से करूं मैं नान के अहवालका।
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥
पेटमें रोटी न थी जबतक दो आलम था सियाह।
जब पड़ी रोटी तो पहुंची अर्श के ऊपर निगाह॥
खुल गये पर्दे थे जितने माही से ले ताबमाह।
क्या करामत है फ़क़त रोटी में यारो वाहवाह॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये॥

क्या चमकता है पड़ा हरआन टुकड़ा नानका ।
चाँद का टुकड़ा कहूं मैं याकि टुकड़ा जानका॥
रूह नाचे है बदन में नाम सुनकर ख़ान का ।
जान आती है लिये से नाम दस्तरख़ान का ॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये ।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये ॥
हुस्न जितने हैं जहाँ में सब भरे हैं ख़ान में ।
ख़ूबियाँ जितनी हैं लाकर सब भरी हैं ख़ानमें॥
आशिक़ो माशूक़ भी इकता के हैं दर्म्यान में ।
फँस रहे हैं सबके दिल रोटी के दस्तरख़ान में॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये ।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये ॥
जो मुरीद अपना किसी दर्वेश को करताहै पीर।
यानी कुछ देखे तजल्ली की करामत दिलपज़ीर॥
खातिही दो रोटियाँ दिल होगया बद्रेमुनीर ।
कोई रोटी सा नहीं अब पीरो मुर्शिद ऐ नज़ीर॥
दो चपाती के वरक़ में सब वरक़ रोशन हुये ।
इक रिकाबी में हमें चौदह तबक़ रोशन हुये ॥

आटे दाल के बयान में ।

क्या कहूं यारो मैं नक़्शा ख़ल्क़ के अहवाल का।
अच्छे दौलत का चलन या मुफ़्लिसो कंगाल का॥
यह बयाँ तो वाक़ई है हरकिसी के हाल का ।
क्या तवंगर क्या ग़नी क्या पीर औ क्या बालका ॥
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे दाल का॥
गर न आटे दाल का अन्देशा होता सहेराह ।
तो न फिरते मुल्कगिरी को बज़ीरो पादशाह ॥
साथ गोले तोप के औ हशमतो फ़ौजो सिपाह।
जाबजा गढ़ कोट से लड़ते हुये फिरते हैं आह॥
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे दालका॥
गर न आटेदाल का होता क़दम ह्यां दरमियाँ।
मुन्शियो मीरोवज़ीरो बख़्शियो नौवाब खाँ ॥
जागते दरबार में क्यों आधी २ रात हाँ ।
क्या अजब नक़्शा पड़ा है आह क्या कहिये मियाँ॥
सबके दिलको फ़िक्रहै दिनरात आटेदाल का॥
अपने आलम में यह आटादाल भी क्या फ़र्द है।
हुल्ल का दादा भी हो तो आगे इसके गर्द है ॥

आशिकों का भी इसीके इश्क़ से मुहँ ज़र्द है।
ताकुजा कहिये कि क्या यह मर्द क्या नामर्द है॥
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटेदाल का॥
दिलबरों के चश्म अबरू ज़ुल्फ़ क्या ख़तख़ाल है।
नाज़ुकी शोख़ी अदायें हुस्न लालोलाल है ॥
क्या कमर पतली है काफ़र क्या ठुमकती चाल है।
ग़ौरकर देखा है जो कुछ है सो आटादाल है॥
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटेदाल का॥
अब जिन्हें अल्लाहने यों करदिया कामिल फ़क़ीर
वह तो बेपरवा सख़ी दाताहैं आपी दिलपज़ीर
और जितने हैं वह सब हैं दालआटे के असीर।
उन ग़रीबों को भी अब यह शक्ल हैगी ऐ नज़ीर॥
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटेदालका॥

कौड़ी के बयान में।

कौड़ी है जिन्के पास वह अच्छे यक़ीन हैं ।
खाने को उनके न्यामतें सौ बेहतरीन हैं ॥
कपड़े भी उनके तनमें निहायत महीन हैं ।
समझे हैं इसको वह जो बड़े नुक्ते चीन हैं ॥

कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ॥
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन तीन हैं॥
कौड़ी बग़ैर सोते थे ख़ाली ज़मीन पर ।
कौड़ी हुई तो रहने लगे शहनशीन पर ॥
पटके सुनहरे बँध गये जामों के चीन पर ।
मोती के गुच्छे लग गये घोड़ों के ज़ीन पर ॥
कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीनतीन हैं ॥
कौड़ीही चाहती है सदा पादशाह को ।
कौड़ीही थाम लेती है फ़ौजो सिपाह को ॥
लेकर छड़ी रुमाल गदा भी निबाह को ।
फिरता है हर दुकान प कौड़ी के चाह को ॥
कौड़ी के सब जहान मे नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीनतीन हैं ॥
कौड़ी न हो तो फिर यह झमेला कहाँ से हो।
रथख़ाना पीलख़ाना तबेला कहाँ से हो ॥
मुड़वा के सिर फ़क़ीर का चेला कहाँ से हो ।
कौड़ी न हो तो साईं का मेला कहाँ से हो ॥

कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीनतीन हैं ॥
काँधे प तेग़ धरते हैं कौड़ी के वास्ते ।
आपस में खून करते हैं कौड़ी के वास्ते ॥
हांतक तो लोग मरते हैं कौड़ी के वास्ते ।
जी जान दे गुज़रते हैं कौड़ी के वास्ते ॥
कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीनतीन हैं ॥
गाली व मार खाते हैं कौड़ी के वास्ते ।
शर्मोहया उठाते हैं कौड़ी के वास्ते ॥
सौ मुल्क छान आते हैं कौड़ी के वास्ते ।
मस्जिद को दम में ढाते हैं कौड़ी के वास्ते॥
कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीनतीन हैं ॥
बिन कौड़ी खुदाई के भी ऐसी न क़द्र थी ।
कौड़ी जब आई पास तो बन बैठे सेठ जी ॥
आगे गुमाश्तों के खुली हर तरफ़ बही ।
फिर वह जो कुछ कहैं तो वही बात है सही ॥

१२५१

कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगी हैं ।
कौड़ी नहो तो कौड़ी के फिर तीन २ हैं ॥७॥
बिन कौड़ी थीं जो तेल की बासी मुंगौरियाँ।
कौड़ी हुई तो कटने लगीं लम्बी चौड़ियाँ ॥
यों ख़ल्क़ दौड़ें मक्खियाँ ज्यों गुड़ प दौड़ियाँ।
ख़ालिक़ ने क्याही चीज़ बनाई हैं कौड़ियाँ ॥
कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन २ हैं ॥८॥
ख़ासी महल उठाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।
पक्के कुयें खुदाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ॥
पुल औ सरा बनाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।
बाग़ो चमन लगाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ॥
कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ के फिर तीन २ हैं ॥ ९ ॥
ले मुफ़्लिसो फ़क़ीर से ताशाह औ वज़ीरा ।
कौड़ी वह दिलरुबा है कि है सबको दिलपज़ीर ॥
देते हैं जान कौड़ी प तिफ़्लो जवाँ व पीर ।
कौड़ी अजबही चीज़ है मैं क्या कहूं नज़ीर ॥

कौड़ी के सब जहान में नक़्शेनगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन २ हैं ॥१०॥

पैसे के बयान में ।

पैसेही का अमीर के दिल में ख़ियाल है ।
पैसेही का फ़क़ीर भी करता सवाल है ॥
पैसा है फ़ौज पैसाही जाहोजलाल है ।
पैसाही का तमाम यह दङ्गोदवाल है ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चरख़े का माल है ॥
पैसा न हो तो बाग़ोकुयें फिर कहाँ से हों ।
खाने को पूरी और पुये फिर कहाँ से हों ॥
ऐशोतरब के नक़्शे दुये फिर कहाँ से हों ।
हलुआ कचौरी मालपुये फिर कहाँ से हों ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चरख़े का माल है ॥२॥
रौनक़ बहार होती है पैसे से सब हसूल ।
और जो न होवे चेहरे प उड़ती है ख़ाक धूल ॥

पैसे से आदमी है जहाँ बीच मर्द मूल ।
पैसे से लोग करते हैं अर्ज़ल को भी क़बूल ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चरखे का माल है ॥३॥
जोड़े चमन बहार हैं पैसे के ज़ोर से ।
गहने मुरस्सा कार हैं पैसे के ज़ोर से ॥
ख़ुश्बूके फूलोहार हैं पैसे के ज़ोर से ।
सब ऐश औ निगार हैं पैसे के ज़ोर से ।
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ॥
पैसा न हो तो आदमी चर्खे का माल है ॥४॥
पैसाही बस बनाता है इन्साँ के बात को ।
पैसाही ज़ेब देता है व्याहो बरात को ॥
भाई सगा भी आनके पूछे न बात को ।
बिन पैसे यारो टुलह: बने आधीरात को ।
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ॥
पैसा न हो तो आदमी चर्खे का माल है ॥५॥
पैसे ने जिस मकाँ में बिछाया है अपना जाल ।
फँसते हैं उस मकाँ में फ़रिश्तों के पर व बाल ॥

पैसे के आगे क्या हैं यह महबूब खुश्जमाल ।
पैसा परी को लाये परिस्तान से निकाल ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ का माल है ॥६॥
तेग़ोसिपर उठाते हैं पैसे के वास्ते ।
तीरोसना लगाते हैं पैसे के वास्ते ॥
मैदाँ में ज़ख्म खाते हैं पैसे के वास्ते ।
याँतक कि सर कटाते हैं पैसे के वास्ते ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ का माल है ॥७॥
आलम में खै़र करते हैं पैसे के ज़ोर से ।
बुनियाद ढेर करते हैं पैसे के ज़ोर से ॥
दोज़ख़ में क़ब्र करते हैं पैसे के ज़ोर से ।
जिन्नत की सैर करते हैं पैसे के ज़ोर से ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ का माल है ॥८॥
दुनियाँ में दीनदार कहाता भी नाम है ।
पैसा जहाँ के बीच वह क़ायममुक़ाम है ॥

पैसाही जिस्मोजान है पैसाही काम है ।
पैसाही का नज़ीर यह आदम गुलाम है ॥
पैसा है रङ्गरूप पैसाही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े का माल है ॥९॥

तथा ।

नक़्श यहाँ जिसके मियाँ हाथ लगा पैसे का ।
उसने तैयार हरइक ठाट किया पैसे का ॥
घर भी पाकीज़: इमारत से बना पैसे का ।
खाना आराम से खाने को मिला पैसे का ॥
कपड़ा तन का भी मिला ज़ेबफ़ेज़ा पैसे का ॥१॥
जब हुआ पैसे का ऐ दोस्तो आकर संयोग ।
अश्रतें पास हुईं दूर हुये मनके रोग ॥
खाये जब मालपुये दूध दही मोहनभोग ।
दिल को आनन्द हुये भाग गये रोग औ दोग ॥
ऐसी खूबी है जहाँ आना हुआ पैसे का ॥ २ ॥
साथ इकदोस्त के इकदिन जो मैं गुल्शन में गया।
वाँ सरो औ समनो लाल व गुल् को देखा ॥

पूछा उस्से कि यह है बाग़ बताओ किसका ।
उसने तब गुल्की तरह हँसदिया औ मुझ्से कहा
मेहरबाँ मुझ्से यह तुम पूछो क्या पैसे का ॥३॥
यह तो क्या और बड़े इस्से हैं जो बाग़ोचमन ।
खिल रहे हैं क्यारियों में नर्गिसोनसरींसमन ॥
हौज़ फ़ौआरे हैं बँगलों में भी परदे चिलवन ।
जाबजा क़ुमरी औ बुलबुलकी सदा शोरअफ़गन
वाँ भी देखा तो फ़क़त गुल है खिला पैसे का॥
आया इस्में लिये इक शख़्स मुरस्सा पिंजरा ।
लाल दस्तार अँगरखा औ दुपट्टा था हरा ॥
उसमें इक बैठी वह मीना कि हो बुल्बुलभी फ़िदा
मैने पूछा यह तुम्हारा है रहा वह चुप्का ॥
निकली मिन्क़ार से मीना के सदा पैसे का ॥५॥
वाँ से निकला तो मकाँ एक नज़र आया ऐसा ।
दरोदीवारों से चमके था पड़ा आबेतिला ॥
सीम चूने की जगह उसके था ईंटों में लगा ।
वाहवा करके कहा मैने यह हैगा किसका ॥
फ़ैल्क़ ने तब मुझे चुप्के से कहा पैसे का ॥ ६ ॥

अटका आशिक़ से जो माशूक़ है कोइ हटका भरा।
और वह मिन्नत से नहीं होता है ख़ुश उसे ज़रा॥
क्या सिफ़त पैसे में है लाके ज्योंही आगे धरा।
दिल अगर संग से भी उसका ज़ियादा था करा॥
मोम सा हो गया झट देख शकल पैसे का ॥७॥
दाम में दाम के यारो जो मेरा दिल है असीर।
इसलिये होती है यह मेरी ज़ुबाँ से तक़रीर॥
जो भी ख़ुश रहता है औ दिलभी बहुत ऐशपज़ीर।
जिस क़दर हो सका मैंने किया तहरीर नज़ीर॥
वस्फ़ आगे मैं लिखूं तो व कुजा पैसे का ॥८॥

दर बयान तलाश ज़र।

दुनियाँ में कौन है जो नहीं मुब्तिलाय ज़र।
जितने हैं सबके दिलमें भरी है हवाय ज़र॥
आँखों में दिलमें जान में सीनः में जाय ज़र।
हमको भी कुछ तलाश नहीं अब सिवाय ज़र॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाय ज़र।
हरइक यही पुकारे है दिन्रात हाय ज़र॥१॥

सोना अगर्चि ज़र्द है या सुर्ख़फ़ाम है ।
लेकिन तमाम ख़ल्क़ को उससेही काम है ॥
सबमें ज़ियादा हुस्न के उल्फ़त का दाम है ।
ज़र वह है जिसका हुस्न भी अदना गुलाम है॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाय ज़र ।
हरडूक यही पुकारे है दिनरात हाय ज़र ॥७॥
होती हैं ज़र के वास्ते हर जा चढ़ाइयाँ ।
कटते हैं हाथ पाँव गले औ कलाइयाँ ॥
बन्दूकें और हैं कहीं तोपें लगाइयाँ ।
कुल ज़र की हो रही हैं जहाँ में लड़ाइयाँ ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाय ज़र ।
हरडूक यही पुकारे है दिनरात हाय ज़र ॥८॥
जितने जहाँ में ख़ल्क़ हैं क्या शाह क्या वज़ीर ।
पीरोमुरीद मुफ़्लिसो मुहताज औ फ़क़ीर ॥
सब हैंगे ज़र के जाल में जी जान से असीर ।
क्या २ कहूं मैं ख़ूबियाँ ज़र की मियाँ नज़ीर ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाय ज़र ।
हरडूक यही पुकारे है दिनरात हाय ज़र ॥ ९ ॥

दर वयान इनामहाय ख़ुदाय ज़मीन व आसमां ।

ऐ दिल कहीं तु जाके न अपनी ज़ुबाँ हिलाय।
औ दर्द अपने दिल का किसी को तु मत सुनाय॥
माँग उसी जिसके हाथ से तू पेट भर के खाय।
मशहूर यह मसल है कहूं क्या मैं तुझसे हाय॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय॥१॥
क़ादिर क़दीर ख़ालिक़ो हाकिम हकीम है ।
मालिक मलीक हैय तवाना क़दीम है ॥
दोनों जहाँ में ज़ात उसी की करीम है ।
यानी उसी का नाम ग़फ़ूरुलरहीम है ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जोहाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय॥२॥
सत्तार ज़ुलजलाल ख़ुदावन्द किर्दगार ।
रज्ज़ाक़ कारसाज़ मददगार दोस्तदार ॥

इन्सान देव जिन व परी फ़ीलो मोरोमार ।
जारी उसी के हाथ से हैं सबके कारोबार ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥३॥
कहने के तईं अगर्चे वह अब बेनियाज़ है ।
पर सब नियाज़मन्दों का उसपर ही नाज़ है ॥
जितने हैं बन्दे सब का वह बन्दानिवाज़ है ।
जितनी हैं ख़ल्क़ सबका वही कारसाज़ है ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥४॥
अल्ले जहाँ में जितने तु इन सबका छोड़ हाथ ।
नहिं पाँव पड़ किसी के तु ऐ दिल न जोड़ हाथ
दो हाथवाले जितने हैं इन सब से मोड़ हाथ ।
उसीही माँग जिसके हैं अब सौ करोड़ हाथ ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें हैं क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥५॥
उसके सिवा किसी के कने गर तु जायगा ।
इस आबरू को अपने तु नाहक़ गँवायगा ॥

शर्मिन्दा होके योहीं तु ख़ाली फिर आयगा ।
बिन हुक्म उसके यार तु इक जौ न पायगा ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमेंहै क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥६॥
ज़र सीमोलालो दुर को लुबारी उसी से माँग।
सन्दूक़ोमालो धन को पेटारी उसी से माँग ॥
बेटा जो माँगना है तो जा रे उसी से माँग ।
कौड़ी भी माँगनी है तो प्यारे उसी से माँग॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमेंहै क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥९॥
गर वह दिलाया चाहै तो दुश्मन से जा दिलाय।
औ जो न दे तो दोस्त भी फिर अपना मुहँ छिपाय
बिन हुक्म उसके रोटी का टुकड़ा न हाथ आय।
गर चिल्लू पानी माँगे तो हरगिज़ न कोइ पिलाय
ग़ैर अज़ ख़ुदाके किसमेंहै क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥८॥
ज़रदार जिसको समझे है तू सेठ साहुकार ।
यह सब उसी से माँगे हैं दिनरात बारबार ॥

हरगिज़ किसी के साम्हने मत हाथ को पसार।
पूरी तेरी उसी के दिये से पड़ेगी यार ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़्दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥९॥
ज़रदार मालदार के मत फिर तु आसपास ।
मुहताज होके आप वह बैठा है जी उदास ॥
माबाप यार दोस्त जिगर सब से हो निरास ।
हरदम् उसी करीम की रख अपने दिल्में आस
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़्दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥१०॥
उमदः हैं जितने ख़ल्क़में क्या शाह क्या वज़ीर।
अल्लाही बस ग़नी है मियाँ औ हैं सब फ़क़ीर ॥
क्या गंजोमुल्कोमालो मकाँ ताज क्या सरीर ।
जो माँगना है उसीही माँगो मियाँ नज़ीर ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाय
मक़्दूर क्या किसी का वही दे वही दिलाय ॥११॥

दर बयान क़नायत ।

जो फ़क्र में पूरे हैं वह हर हाल में ख़ुश हैं ।
हर काम में हर दाम में हर जाल में ख़ुश हैं ॥
गर माल दिया यार ने तो माल में ख़ुश है ।
बे ज़र जो किया तो उसी अहवाल में ख़ुश हैं ॥
अफ़्लास में औ बार में एक्बाल में ख़ुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में ख़ुश हैं ॥ १ ॥
चेहरे प मलामत न जिगर में असरे ग़म ।
माथे प कहीं चीन न अबरू में कहीं ख़म ॥
शिकवा न ज़ुबाँ पर न कभी चश्म हुये नम ।
ग़म में भी वही ऐश अलम में भी वही दम ॥
हर बात हर औक़ात हर अफ़्आल में ख़ुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में ख़ुश हैं ॥ २ ॥
गर यार की मर्ज़ी हुई सर जोड़ के बैठे ।
घरबार कुड़ाया तो वहीं छोड़ के बैठे ॥
मोड़ा उन्हें जिस रुख़ वहीं मुहँ मोड़ के बैठे ।
गुदड़ी जो सिलाई तो वही ओढ़ के बैठे ॥

मेवा खिला मेवा मिलै फल फूल दे फल पात ले
आराम दे आराम ले दुखदर्द दे आफ़ात ले ॥
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे इस हाथ ले
काँटा किसीको मत लगा गो मिलेगुल फूला है तू
यह हक़में तेरे तीर है किस बात पर भूलाहै तू
मत आग में डाल और को फिरघाँसकापूलाहै तू
सुन रख यह नुक्ता बेख़बर क्या जानकर घूलाहै तू
कलयुग नहीं करयुग है ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़्दहै इसहाथ दे इसहाथ ले॥
शोख़ी शरारत मक्रोफ़न सबका बसेखा है यहां
जो जो दिखावै और को वह आपही देखै यहां
खोटी खरी जोकुछ कि है तिसका परेखा है यहां
जो२ पड़ा तलताहै दिल तिल२ का लेखाहै यहां
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रातले
क्या खूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे इस हाथले
जो औरकी बस्ती रखै उसका भी बस्ता है पुरा।
जो और को मारै छुरी उसको भी लगताहै छुरा॥

जो औरकी तोड़ै धुड़ी उस्का भी टूटै है धुरा ।
जो औरकी चेतै बदी उस्का भी होता है बुरा॥
कलयुग नहीं करयुगहै ह्य दिनको दे औ रातले
क्या खूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे इस हाथ ले
जो औरको फल देवैगा वह भी सदा फल पावेगा
गेहूं से गेहूं जौ से जौ चाँवल से चाँवल पावेगा
जो आज देवैगा यहां वैसाही वह कल पावैगा ।
कल देवैगा कल पावैगा कलपावैगा कलपावैगा ॥
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रातले
क्या खूब सौदा नक़्द है इसहाथ दे इसहाथ ले
जो चाहै ले चल इसघड़ी सबजिन्स याँ तैयार है
आराम में आराम है आज़ार में आज़ार है ॥
दुनियाँ नजानइस्कोमियाँदरियाकीयहमँजधारहै
औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है ॥
कलयुग नहीं करयुग है ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़्द है इसहाथ दे इसहाथ ले
तू और की तारीफ़ कर तुझको सनाख़्वानीमिले
करमुश्किलआसाँऔरकीतुझकोभीआसानीमिले

तू और को मेहमानकर तुझकोभीमेहमानीमिले
रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानीमिले
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इसहाथ दे इसहाथ ले ॥
कर चल जोकुछकरनाहोयाँयहदमतोकोईआन है
नुक़्सान में नुक़्सान है यहसान में यहसान है ॥
तुहमत में याँ तुहमत लगी तूफ़ान में तूफ़ान है।
रहिमान को रहिमान है शैतान को शैतान है ॥
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इसहाथ दे इसहाथ ले
याँ ज़क़ दे तू ज़क़ ले शक्कर में शक्कर देख ले ।
नेकों को नेकी का मज़ा मूज़ीको टक्कर देख ले॥
मोती दिये मोती मिले पत्थर में पत्थर देख ले।
गर तुझको यह बावर नहीं तो तू भी करके देखले
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इसहाथ दे इसहाथ ले ॥
अपने नफ़ा के वास्ते मत ग़ैर का नुक़्सान कर।
तेरा भी नुक़्सां होवैगा इसबात पर तू ध्यानकर॥

खाना जो खा तू देखकरपानीपियाकरछानकर ।
याँ पावँ को रखचौंककरऔखौफ़सेगुज़रानकर ॥
कलयुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनको दे औ रात ले।
क्या खूब सौदा नक़्दहै इसहाथ दे इसहाथ ले ॥
ग़फ़्लत की यहजागह नहींयाँसाहिबेइद्राक रह।
दिलशादरख दिलशादरह ग़म्नाकरखग़म्नाकरह
हरहाल में तू भी नज़ीरअबहरक़दमकीख़ाक रह।
यह वह मकाँ है ऐ मियाँ याँ पाकरह बेबाकरह ॥
कलजुग नहीं करयुगहै ह्यां दिनकोदेऔरात ले।
क्या खूब सौदा नक़्द है इसहाथ दे इसहाथ ले ॥

दर बयान नेकी और बदी ।

है दुनियाँ जिस्का नाम मियाँ यह और तरह की बस्ती है। जो महँगों को यह मँहगी है औ सस्तों को यह सस्ती है ॥ याँ हरदम झगड़े उठते हैं हर आन अदालत बस्ती है। गर मस्त करे तो मस्ती है औ पस्त करे तो पस्ती है ॥ कुछ देर नहीं अंधेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इस हाथ मिले याँ

सौदा दस्त बदस्ती है ॥१॥ जो और किसी का मान रखे तो उसको भी अर्मान मिले। जो पान खिलावे पान मिले जो रोटी दे तो नान मिले॥ नुक़्सान करे नुक़्सान मिले यहसान करे यहसान मिले। जो जैसा जिसके साथ करे फिर वैसा उसको आन मिले॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इसहाथ मिले याँ सौदा दस्त बदस्ती है॥ २॥ जो और किसीकी जाँ बख़्शे तो उसकी भी हक़ जान रखे। जो और किसी की आन रखे तो उसकी भी हक़ आन रखे॥ जो याँ का रहनेवाला है यह दिल में अपने जान रखे। यह तुरत फुरत का नक़्शा है इस नक़्शे को पहिचान रखे॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इस हाथ मिले याँ सौदा दस्त बदस्ती है॥३॥ जो पार उतारे औरों को उसकी भी नाव उतरती है। जो ग़र्क़ करे फिर उसकी भी याँ डुबकों २ करती है॥ श-

म्शेर तबर बन्दूक़ सनाँ औ नश्तर तीर नहरनी है। यँा जैसी २ करनी है फिर वैसी पार उतरनी है॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इसहाथ मिले यँा सौदा दस्त बदस्ती है॥ ४॥ जो ऊपर ऊँचा बोल करे तो उसका बोल भी बाला है। औ दे पटके तो उसको भी कोइ और पटकनेवाला है॥ बे ज़ुल्मोख़ता जिस ज़ालिम ने मज़लूम ज़बह करडाला है। उस ज़ालिम के भी लोहू का फिर बहना नहीं नाला है॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इस हाथ मिले यँा सौदा दस्त बदस्ती है॥ ५॥ जो और किसी को नाहक़ में कोइ झूठी बात लगाता है। औ कोई ग़रीब बिचारा है हक़नाहक़ में लुट जाता है॥ वह आप भी लूटा जाता है औ लाठी पाठी खाता है। जो जैसा २ करता है फिर वैसा २ पाता है॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती

है। इस हाथ करो इस हाथ मिले यॉं सौदा दस्त बदस्ती है ॥६॥ है खटका उसके साथ लगा जो और किसी को दे खटका। औ ग़ैब से झटका खाता है जो और किसी को दे झटका॥ चीरे बीच में चीरा है औ पटके बीच जो है पटका। क्या कहिये और नज़ीर आगे है ज़ोर तमाशा झटपट का॥ कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदल परस्ती है। इस हाथ करो इस हाथ मिले यॉं सौदा दस्त बदस्ती है ॥ ७ ॥

अक़िलमन्दों के बयान में।

जहॉं में क्या २ ख़िरद की अपने हरइक बजाता है शादियाने। कोई हकीम और कोई महंदिस कोई हो पंडित कथा बखाने॥ कोई है आक़िल कोई है फ़ाज़िल कोई नजूमी लगा कहाने। जो चाहे कोई यह भेद खोले यह सब हैं हीले यह सब बहाने॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पंडित हज़ारों स्याने। जो खूब देखा तो यार आख़िर खुदा की बातें खुदाही

जाने ॥ १ ॥ हवा के ऊपर यह आसमाँ का बे चोबा ख़ेमाँ जो तन रहा है। न इसकी मेख़ें न हैं तनाबें न इसकी चोबें अधर खड़ा है ॥ इधर है चाँद और उधर है सूरज इधर सितारा उधर हवा है। किसी को मुतलक़ ख़बर नहीं है कि कब बना है औ काहे का है ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पंडित हज़ारों स्याने। जो खूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥ २ ॥ फ़लक तो कहने को टूर हैगा ज़मीं का अब यह जो बिस्तरा है। खड़े हैं लाखों पहाड़ जिस्पर फ़लक से सर जिन्का जा लगा है ॥ हज़ारों हिक्मत का इक बिछौना यह पानी ऊपर जो बिछ रहा है। बहुत हकीमों ने ख़ाक छानी कोई न समझा यह भेद क्या है ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने। जो खूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥३॥ ज़मीं से लेकर जो आसमाँ तक भरी हैं लाखों

तरह की ख़िलक़त । कहीं है हाथी कहीं है चिउँटी कहीं है राई कहीं है परबत ॥ यह जितने जल्वे दिखा रहे हैं ख़ुदा की सनअत ख़ुदा की हिक्मत । जो चाहै खोलै यह भेद उसकी किसी को इतनी नहीं है क़ुदरत ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने । जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥ ४ ॥ कोई है हँसता कोई है रोता कहीं है शादी कहीं ग़मी है । कहीं तरक्क़ी कहीं तनज़्ज़ुल कहीं गुमाँ और कहीं यक़ीं है ॥ कोई घुसता ज़मीं के ऊपर कोई ख़ुशी से फ़लक नशीं है । यह भेद अपना वह आप जाने किसी को हरगिज़ ख़बर नहीं है ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने । जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥ ५ ॥ अजब तरह की रँगीन चौसर ग़रज़ बिछाई है अब ख़ुदा ने । कोई है फ़ुटकल किसी का जुग है फिरे

हैं नरदैं भी ख़ाली ख़ाने ॥ जो पासा फेंकै बना बना कर और दाँव कितने हैं दिल में ठाने । जो चाहता हो अठारह आवैं तो उसको पड़ते हैं तीन काने ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने । जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदाकी बातें ख़ुदाही जाने ६ अजब यह शतरञ्ज का सा नक़्शा बिछा है दिन औ रात इस जा । जो मात चाहै करै किसी को न आवै बुर्द उसको मात इस जा ॥ हज़ारों मंसूबा बाँधै दिल में बनावै चालों की घात इस जा । नहीं है इक चार चौक क़ायम सभों की बाज़ी है मात इस जा ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने । जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥ ७ ॥ अजब तरह के वरक़ बने हैं कोई मोक़द्दर कोई सफ़ा है । किसी के सिर पर है ताजशाही किसी की शमशेर पर जफ़ा है ॥ कोई अमीर और कोई वज़ीर है कोई फ़क़ीरी

में दिल ख़फ़ा है। सभों को इस जा ख़ियाल आता यह हक़ की क़ुदरत का गञ्झिफ़ा है॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने। जो खूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने॥ ८॥ यह कौन जानै कि कल किया क्या और आज मालिक वह क्या करेगा। किसै बिगाड़े किसै सँवारै किसै लुंठावै किसै भरैगा॥ किसी के घर होवै कौन पैदा किसी के घरमें कौन मरेगा। किसी को हरगिज़ ख़बर नहीं है कि क्या किया है औ क्या करेगा॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने। जो खूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदाकी बातें ख़ुदाही जाने॥९॥ अजब तरह का यह हाल हैगा कमन्द कहिये व या कमन्दा। न छूटी चिउँटी न छूटी हाथी न कोई वहशी कोई परिन्दा॥ सभों की गरदन फँसी है इसमें किसी का टूटा न एक फन्दा। नज़ीर इतनी मजाल किसकी कहाँ

ख़ुदा औ कहाँ यह बन्दा ॥ पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने । जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदाही जाने ॥ १० ॥

बनजारे के बयान में ।

टुक हिर्सोहवा को छोड़ मियाँ मत देस बिदेस फिरे मारा । क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा ॥ क्या बधिया भैंसा बैल शुतर क्या गोनें पल्ला भर भारा । क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुवाँ औ अङ्गारा ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥१॥ गर तू है लक्खी बञ्जारा और खेप भी तेरी भारी है । ए ग़ाफ़िल तुझसे भी चढ़ा इक और बड़ा ब्योपारी है ॥ क्या शक्कर मिसरी क़न्द गरी क्या साँबर मीठा खारी हैं । क्या दाख मुनक्का सोंठ मिरच क्या केसर लौंग सोपारी है ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ २ ॥ तू बधिया लादे बैल भरे

जो पूरब पच्छम जावेगा। या सूद बढ़ाकर लावेगा या घाटा टूटा पावेगा॥ बटमार अजल का रस्ते में जब भाला मार गिरावेगा। तब धन औ दौलत नाती पोता एक भी काम न आवेग॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा॥ ३॥ हर मञ्जिल में अब साथ तेरे यह जितना डेरा डण्डा है। ज़र दाम दिरम का भाँडा है बन्दूक़ सिपर औ खाँडा है। जब नायक तन का निकल गया जो मुल्कों २ हाँडा है॥ फिर हाँडा है न फाँडा है न हलुआ है न माँडा है॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजार॥ ४॥ जब चलते २ रस्ते में यह गोन तेरी ढल जावेगी। इक बधिया तेरे मिट्टी पर फिर घास न चरने आवेगी॥ यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सों में बट जावेगी। धी पूत जँवाई बेटा क्या बनजारिन पास न आवेगी॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा॥ ५॥ यह खेप भरे जो जाता

है यह खेप मियाँ मत गिन अपनी। अब कोई घड़ी पल साइत में यह खेप बदन की है कफ़नी ॥ क्या थाल कटोरे चाँदी के क्या पीतल के ढपना ढपनी। क्या बरतन सोने रूपे के क्या मिट्टी की हँडिया चपनी ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ ६ ॥ यह धूम धड़क्का साथ लिये क्यों फिरता है जङ्गल जङ्गल। इक तिनका साथ न जावेगा मौकूफ़ हुआ जब अन औ जल॥ घर बार अटारी चौपारा क्या खासा तनसुख औ मलमल। क्या चिलवन पर्दे फ़र्श नये क्या कमरे औ क्या रङ्ग महल ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ ७ ॥ कुछ काम न आवेगा तेरे यह लाल ज़मुर्रद सीमो ज़र। जब पूंजी बाट में बिखरेगी हर आन बनेगी जान ऊपर॥ नुबत नक़ारे बान निशाँ दौलत हश्मत फौजें लशकर। क्या मसनद तकिया मुल्क मकाँ क्या चौकी कुर्सी तख़्त छतर ॥ सब ठाट पड़ा रह

जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ ८ ॥ क्यों जी पर बोझ उठाता है इन गोनों भारी भारी के । जब मौत लुटेरा आन पड़ा तब कोई नहीं गुनतारी के ॥ क्या साज़ जड़ाऊ ज़र ज़ेवर क्या गोटे थान किनारी के । क्या घोड़े ज़ीन सुनहरे के क्या हाथी लाल अमारी के ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥९॥ मग़रूर नहो तलवारों पर मत भूल भरोसे ढालों के । सब पट्टा तोड़ के भागेंगे मुहँ देख अजल के भालों के ॥ क्या डब्बे मोती हीरों के क्या ढेर ख़ज़ाने मालों के । क्या बग़्चे ताश मुशज्जर के क्या तख़्ते शाल दुशालों के ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥१०॥ क्या सख़ मकाँ बनवाता है खुम तेरे तन का है पोला । तू ऊँची कोट उठाता है वाँ गोर गढ़े ने मुहँ खोला ॥ क्या ज़ेमी ख़न्दक़ रन्द बड़ी क्या बुर्ज कँगूरा अनमोला । गढ़ कोट रहकला तोप क़िला क्या शीशदार व क्या गोला ॥ सब ठाट

पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ११
हर आन नफ़े औ टूटी में क्यों मरता फिरता
है बनबन । टुक ग़ाफ़िल दिल में सोच ज़रा
है साथ लगा तेरे दुशमन ॥ क्या लौंडी बाँदी
दाई हुआ क्या बन्दा चेला नेक चलन । क्या
मन्दिर मसजिद ताल कुयें क्या घाट सरा क्या
बाग़ चमन ॥ सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब
लाद चलेगा बनजारा ॥ १२ ॥ जब मर्ग फिरा
कर चाबुक को यह बैल बदन का हाँकेगा ।
कोइ नाज समीटेगा तेरा कोइ गोन सिये औ
टाँकेगा ॥ हो ढेर अकेला जङ्गल में तू ख़ाक ल-
हद की फाँकेगा । उस जङ्गल में फिर आह न-
ज़ीर इक तिनका आन न झाँकेगा ॥ सब ठाट
पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ १३ ॥

दर बयान फ़ेनाय जहाँ ।

गर ताज सिर पर रखकर अफ़सर हुआ तो फिर क्या ।
औ बख़्शे सल्तनत का गौहर हुआ तो फिर क्या ॥
माहे अलम मरातिब पुर्ज़र हुआ तो फिर क्या ।
नौबत निशाँ नक़ारा दर पर हुआ तो फिर क्या ॥

सब मुल्क सब जहाँ का सरवर हुआ तो फिर क्या॥
रख करके फ़ौज लश्कर की सल्तनत पनाही।
फेरी दोहाई अपनी ले माह ता ब माही ॥
जब आनकर फ़ेना की सिर पर पड़ी तबाही।
फिर सर रहा न लश्कर न ताज पादशाही ॥
दारा औ जम सिकन्दर अक्बरहुआतोफिरक्या॥
या ज़ात में कहाये नामी असील ज़ाती ।
जम्शेद फ़र के पोते नौशेरवाँ के नाती ॥
थे आप मिस्ल टूल्हा औ फौज थी बराती ।
जब चल बसे तो कोई फिर सङ्ग था न साती॥
मुल्को मकाँ ख़ज़ाना लश्कर हुआ तो फिरक्या॥
या राजबंसी होकर दुनियाँ में राज पाया ।
चित्तौर गढ़ सितारा कालिञ्जरा बनाया ॥
जब तोप ने अजल के आ मूरचा लगाया ।
सब उड़ गये हवा पर कोई न काम आया ॥
गढ़ कोट तोप गोला लश्कर हुआ तो फिरक्या॥
कितने दिनों यह गुल था नौवाब हैं यह खाँ हैं।
यह दूबन पँज हज़ारे यह आली ख़ान्दाँ हैं ॥

जागीरो मालो मन्सब गो आज इनके ह्याँ हैं।
देखा तो इक घड़ी में नहिं नाम नहिं निशाँ हैं॥
दो दिन का शोर चर्चा घर २ हुआ तो फिर क्या॥
कहता था कोई देखो यह हैं अमीरख़ाँ जी ।
औ हैं यह ख़ानख़ानाँ औ यह मशीरख़ाँ जी॥
पञ्जा उठा क़ज़ा का जब आये शेरख़ाँ जी ।
फिर किसके मीरख़ाँ जी किसके वज़ीरख़ाँ जी॥
उम्दा ग़नी तवङ्गर बाज़र हुआ तो फिर क्या॥
कहता था कोई घोड़ा है नामदारख़ाँ का ।
यह पालकी यह हाथी है जुल्फ़क़ारख़ाँ का॥
आया क़दम अजल के जब तीसमारख़ाँ का ।
ख़र भी कहीं न देखा फिर शहसवारख़ाँ का॥
झप्पान मैक डम्बर दर पर हुआ तो फिर क्या॥
कहता था कोई डेवढ़ी है ख़ानेमेज़बाँ की ।
यह बाग़ यह हवेली है मह्लदारख़ाँ की॥
जब राज ने क़ज़ा के करनी बसूली टाँकी ।
इक ईंट भी न पाई हरगिज़ किसी मकाँ की॥
रङ्गीं महल सुनहरा घर दर हुआ तो फिर क्या॥

कितनों ने पादशाही क्या २ ख़िताब पाया ।
मोहरें बड़ी खोदाईं सिक्का बड़ा बनाया ॥
जब आनकर फ़ना ने नामो निशाँ मिटाया ।
वह नाम और वह सिक्का ढूंढा कहीं न पाय ॥
दोदिन का मोहरछापा दर पर हुआतोफिरक्या ॥
जागीर में किसी ने ज़रखेज़ मुल्क पाया ।
कर बन्दोबस्त अपना नज़्मोनसक़ बिठाया ॥
लेकर सनद अजल का जब फ़ौजदार आया ।
इक दिन में हुक्मो हासिल सब होगया पराया ॥
हाँसो हसार ठट्ठा भक्कर हुआ तो फिर क्या ॥
कहता था कोई लश्कर है तुर्रेबाज़ख़ाँ का ।
यह ख़ेमाँ शामियाना है शहसवारख़ाँ का ॥
आया कटक अजल का जब चढ़के बाज़ख़ाँ का ।
सर भी कहीं न पाया फिर सरफ़राज़ख़ाँ का ॥
सर्दार मीरबख़्शी बढ़कर हुआ तो फिर क्या ॥
हाथी प चढ़के निकले या ख़ासे घोड़े ऊपर ।
या नालकी सँभाली या पालकी की झालर ॥
या ले सुराही हुक्का दौड़े जलौब अन्दर ।
जब आ अजल पुकारे साहब रहा न नोकर ॥

आक़ा हुआ तो फिरक्यानोकरहुआतोफिरक्या ॥
या रख के इक क़लमदाँ औ क़ल्म को उठाकर।
जोड़े हिसाब लाखों चेहरे लिखे सरासर ॥
जब उम्र की कचहरी झाँकी क़ज़ा ने आकर।
फिर आप न कलमदाँ काग़ज़ रहा न दफ़्तर ॥
मुन्शी वकील दीवाँ मर्मर हुआ तो फिर क्या ॥
या ले क़ज़ा की ख़िदमत हो बैठे आप क़ाज़ी।
महज़र क़बाला लिक्खे क़ज़िये चुकाये शरई ॥
एलाम ले क़ज़ा का जब आफ़ेना पुकारी ।
फिर मुहकमा न झगड़ा क़ाज़ी रहा न मुफ़्ती ॥
कोड़ा लबेद दर्रा दर पर हुआ तो फिर क्या ॥
कुतवाल बनके बैठा या सद्र हो मुक़र्रर ।
फ़ासिक़ डरें हज़ारों औ चोर काँपें थरथर ॥
आया क़ज़ा का मर्धा जिस दम छुरी उठाकर।
कुतवाली औ सदारत सब होगई हवा पर ॥
दोदिन का ख़ौफ़ख़तरा डर २ हुआतोफिरक्या ॥
कहते थे कितने हम तो हैं ज़ात में कलाँ जी।
हम शेख़ हम मोग़ल हैं हम हैं पठान हाँ जी ॥

जिस दम क़ज़ा पुकारे अब उठ चलो मियाँजी।
फिर शेख़जी न सैयद मिर्ज़ा रहे न ख़ां जी ॥
ज़ातो हसबनसब का जौहर हुआ तो फिरक्या ॥
या लेके ज़र जहाँ में करने लगे तजारत ।
या सेठ बनके बैठे ख़ासी बना इमारत ॥
खोली क़ज़ा ने बहियाँ जब करके टुक इशारत।
सब कोठी औ दुकानें करडालीं दम में ग़ारत ॥
मालोमकाँ जवाहिर औ ज़र हुआ तो फिरक्या ॥
या हो सिपाही बाँका तिरछा बड़ा कहाया ।
बल्दार बाँध चीरा तुर्रे को जगमगाया ॥
खेतों में जाके कूदा लाखों तईं भगाया ।
जब मुंह अजल का देखाफिरकुछभीबननआया ॥
इक्का शुजा बहादुर सफ़्दर हुआ तो फिर क्या ॥
घोड़ा उठा के कूदा फ़ौजों में हो दिलावर ।
मारे तपञ्चे भाले खा ली कटार जम्धर ॥
मारा क़ज़ा ने भाला जिस्दम फ़ेनाकाआकर।
फिर मर्दुमी शजाअत सब हो गई बराबर ॥
खूदोसिलाह चिल्ता बक्तर हुआ तो फिर क्या ॥

या खाना जङ्गी लड़कर खाया बदन में टाँका।
मोछों को ताव देकर सौ दो सौ हात हाँका॥
जब घूरकर क़ज़ा के बाँके ने आके झाँका।
टेढ़ा रहा न तिरछा गुण्डा रहा न बाँका॥
तेग़ा सिपर क़रावें जम्धर हुआ तो फिर क्या॥
या हो हकीम हाज़िक़ करने लगे तबाबत।
मुर्दों को जा जिलाया ईसा की ली करामत॥
खोये मरज़ हज़ारों धोये हर एक ज़हमत।
जब आई सिर प अपने फिरकुछचलीनहिक्मत॥
लुक्मान या फ़लातूं आकर हुआ तो फिर क्या॥
या हो नजूमी कामिल तारों को छान डाला।
सूरज गहन बिचारे चन्दरगहन निकाला॥
बुर्जों सितारे बाँधे यहकाम को सँभाला।
जब वक़्त अपना आया उस वक़्त को न टाला॥
जोतिश नजूम पण्डित पढ़करहुआतोफिरक्या॥
या पढ़के वहकितावें औ कर इलमको हासिल।
या भूत जिन उतारे मशहूर होके आमिल॥
जब देवका अजल के साया हुआ मुक़ाबिल।
मुल्ला रहा न स्याना आमिल रहा न फ़ाज़िल॥

तावीज़ फ़ाल जादू मन्तर हुआ तो फिर क्या ॥
माथे प खींच टीका या लेके हाथ माला ।
पोथी बग़ल में दाबी जुन्नार को सँभाला ॥
पूजा कथा बखाने कितना शबद निकाला ।
कुछ बन सका न आया जब जान लेनेवाला ॥
बेदो पुरान पढ़कर मिस्सर हुआ तो फिर क्या ॥
या पीके मै किसी ने की ऐश कामियाबी ।
लूटा नशे में हर जा कर दिल से बेहिजाबी ॥
जिस दम क़ज़ा ने अपनीझमकाईइकगुलाबी ।
फिर मै रही न मीना न मस्त न शराबी ॥
इकदम लबों प मैका साग़र हुआ तो फिर क्या ॥
हुस्नो जमाल पाकर या खूबरू कहाया ।
या इश्क़ में किसी ने जी जान को घुटाया ॥
आकर पड़ा सिरों पर जिसदमअजलकासाया ।
दोनों में फिर किसी को ढूंढा कहीं न पाया ॥
आशिक़हुआतोफिरक्यादिल्बरहुआतोफिरक्या॥
या होके पीरज़ादे करने लगे फ़कीरी ।
करके मुरीद कितने की उनकी दस्तगीरी ॥

जब पैरहन की कफ़नी आकर अजल ने चीरी।
सब उड़ गई हवा पर दम् में मुरीदी पीरी ॥
मुर्शिद फ़क़ीर हादी रहबर हुआ तो फिर क्या ॥
या सर मुड़ा के बैठे आज़ाद हो नवेले ।
या खुदमुंड़े कहाकर सौ रूप रङ्ग खेले ॥
मेले किये हज़ारों मूंड़े फ़क़ीर चेले ।
जब आ फ़ेना पुकारे जा सो रहे अकेले ॥
तकिया हुई तो फिरक्याबिस्तरहुआतोफिरक्या ॥
जोगी अतीत जङ्गम या सेवड़ा कहाया ।
या खोलकर जटा को या घोंट सर मुंड़ाया ॥
तिर्सूल ले क़ज़ा का जब वक़्त सिर पर आया ।
न पालकी को थाँभा न आप को बचाया ॥
नानक कबीरपन्थी भरथर हुआ तो फिर क्या ॥
या नेक बनके बैठे अच्छे लगे कहाने ।
या होके बद हरइक के दिलको लगे सताने ॥
आकर बजे अजल के जब सिर प शादियाने ।
थे नेकोबद जहाँ तक सब लग गये ठिकाने ॥
बेहतर हुआ तोफिरक्याबद्तरहुआतोफिरक्या ॥

क्या हिन्दू औ मुसल्माँ क्या रिन्दोगोब्रकाफ़र ।
नक्काश क्या मुसौअर क्या खुशनवीस शाअर ॥
जितने नज़ीर हैं ह्याँ इक दम के हैं मुसाफ़र ।
रहना नहीं किसी को चलना है सबको आख़र ॥
दोचार दिन के ख़ातर ह्याँ घर हुआतोफिरक्या ॥

दर बयान मौत ।

दुनियाँ में अपना जी कोइ बहला के मरगया ।
दिल तड़ियों से औ कोइ उकता के मरगय ॥
आक़िल था वह तो आप को समझा के मरगया ।
बे अक्ल छाती पीट के घबरा के मरगया ॥
दुख पाके मर गया कोइ सुख पाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१॥
दिन रात रन मची है यहाँ औ बड़ी है जङ्ग ।
चलते हैं नित अजल के सनाँ गोली औ तुफ़ङ्ग ॥
जिसका क़दम बढ़ा वह मरा ओहीं बेदिरङ्ग ।
जी जी छिपाके भागा तो उसका हुआ बहरङ्ग ॥
वह भागते में तेग़ो तबर खाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥२॥

पैदा हुये हैं ख़ल्क़ में अब जितने जुज़ व कुल।
या चुप गुज़ारी उम्र व या धूम कर चुहुल ॥
जब आनकर फ़ेना ने खिलाया अजल का गुल।
काम आई कुछ किसी की ख़मोशी न शोरगुल॥
चुप्के कोई मुआ कोइ चिल्ला के मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥३॥
गर लाख अश्रतों से हुआ दिल में धूमधाम ।
या सौ मुसीबतों से हुआ ग़म का अज़दहाम ॥
आख़िर को जब अजल ने कियाआनकरसलाम।
ज़न के ख़याले ग़म में कोई हो गया तमाम॥
हूर और परियाँ छोड़ कोई घर में मर गया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥४॥
पढ़कर निमाज़ कोई रहा पाक वा वज़ू ।
कोई शराब पीके फिरा मस्त कूबकू ॥
नापाकी पाकी मौत के ठहरी न रूबरू ।
कोई इबादतों से मुआ होके सुर्ख़रू ॥
नापाक रू सियाह भी पकृताके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥५॥

कर दिलके आइने के तईं साफ़ एक बार ।
कश्फ़ेक़लूब दिल प किया अपना आशकार ॥
जब पीक ने अजल की किया आनकर पुकार।
काम आई रोशनी न करामात की बहार ॥
कामिल फ़क़ीर ख़ल्क़ में कहलाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥६॥
बिल्फ़र्ज़ गर किसी को हुई याद कीमिया ।
या मुफ़्लिसी में एक ने खूने जिगर पिया ॥
कोई ज़ियादः उम्र से इक दम नहीं जिया ।
सूखी किसी ने रोटी चबा ग़म में जी दिया ॥
क़लिया पुलाव ज़र्दा कोई खाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥७॥
पहिना लिबास खूब अगर इत्र का भरा ।
या चीथड़ों की गुदड़ी कोई ओढ़ कर मरा ॥
आख़िर को जब अजल की चली आनकर हवा।
पोले की झोपड़ी को कोई छोड़ कर मरा ॥
बाग़ो मकाँ महल कोई बनवाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥८॥

गेसू बढ़ा के कोई मशायख़ हुआ यहाँ ।
या बेनवा हो कोई हुआ ख़ुद मुंड़ा यहाँ ॥
जब मुर्शिदे अजल का क़दम आया दरमियाँ ।
कोई तो लम्बी दाढ़ी लिये हो गया रवाँ ॥
मोंछें भवें तलक कोई मुंड़वा के मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥९॥
गर एक बेवक़ार हुआ एक क़द्रदार ।
सिर पर लगा जब आनके तेग़े अजल का वार ॥
बेक़दरी काम आई किसी का न कुछ वक़ार ।
था बेहया सो वह तो मुआ खोके नङ्गो आर ॥
और जिस्को शर्म थी सो वह शर्मा के मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१०॥
कोइ ठूटी चाबता था कोई मोठ औ मटर ।
जिस दम क़ज़ा ने हाथ में ली तेग़ औ सपर ॥
काम आई कुछ फ़कीरी न कुछ तख़्त औ छतर ।
यह ख़ाक पर मुआ वह मुआ तख़्त के उपर ॥
थी जिसकी जैसी कद्र वह बतलाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥११॥

आशिक़ हो गर किसी ने किसी गुलकी चाह ली ।
माशूक़ी काम आई किसी की न आशकी ॥
और जब अजल की दोनों से आकर लगन लगी ।
आशिक़ ने अपने इश्क़ बढ़ाने में जान दी ॥
दिलबर भी अपने हुस्न को चमकाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१२॥
कितनों में बढ़के ऐसी बढ़ी उल्फ़तों की चाह ।
कि जिसमोजान एक हुये उन्के वाहवाह ॥
आशिक़ मुआ तो मरगया माशूक़ ख़ामख्वाह ।
माशूक़ मरगया तो वह आशिक़ भी करके आह ॥
उस गुलबदन के क़ब्र उपर जाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१३॥
क्या काले पीले शक्ल के क्या गोरे गुलअज़ार ।
आशिक़ कोई है औ कोइ माशूक़ तर्हदार ॥
आक़िल हकीमो आमिलो फ़ाज़िल रसालदार ।
पण्डित नजूमी वैद चे नादाँ चे होशियार ॥
दो दिन की शान हर कोई दिखलाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१४॥

क्या ओछे ज़ात पात के अश्राफ़ क्या नजीब ।
क़िस्मत से फूटी कौड़ी किसी को नहो नसीब ॥
जिस दम क़ज़ा के हाथ ने बन्द आँख की हबीब ।
क्या होशियारो आक़िलो दाना व क्या तबीब ॥
कोई ख़ज़ाने ख़ाक में गड़वाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१५॥
मरने से पहिले मर गये जो आशिक़ाने ज़ार ।
वह ज़िन्दये अबद हुये ता हश्र बरक़रार ॥
क्या कातिबाने अच्छे क़लम् खुशनवीसकार ।
जितनी किताबें हैं यहाँ हों लाख या हज़ार ॥
कोइ लिखके मरगया कोई लिखवाके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१६॥
पीरो मुरीद शाहो गदा मीर औ वज़ीर ।
सब आनकर अजल के हुये दाम में असीर ॥
मुफ़्लिस ग़रीब साहबे ताजो अलम सरीर ।
कौन इस जहाँ में ज़िन्दः रहा ए मियाँ नज़ीर ॥
कोई हज़ारों ऐश को ठहराके मरगया ।
जीता रहा न कोई हर इक आके मरगया ॥१९॥

दर बयान फ़ेना ।

पढ़ इल्म गये इस दुनियाँ में गर कामिल दी इदराक हुये । औ लाद किताबें ऊँटों पर हर मानी के दर्राक हुये ॥ माकूल पढ़े मन्कूल पढ़े हर मन्तिक़ में चालाक हुये । या जितने इल्म के दरिया हैं उन दरिया के पैराक हुये ॥ सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये । जब मौत से आकर काम पड़ा सब क़िस्से क़ाज़िये पाक हुये ॥१॥ मशहूर हकीम औ वैद हुये या पढ़ कर इल्म तबाबत का । दालान किताबों से रोका औ नुस्ख़ों से सन्दूक़ भरा ॥ जब मौत मरज़ ने आन लिया सब भूले नब्ज़ औ क़ारूरा । गो नुस्ख़े लाख मुजर्रब थे पर काम न आया इक नुस्ख़ा ॥ सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये । जब मौत से आकर काम पड़ा सब क़िस्से क़ाज़िये पाक हुये ॥२॥ या कोठी करके सेठ हुआ या खोद ज़मीं को खेती की । लिख डालीं बहियाँ लाखों की बो

डाली धरती बुरी भली ॥ जब हुण्डी आई मालिक की औ आकर जम की भेज लगी । याँ कोठी कोठी बैठ गई वाँ खेती बारी खेत रही ॥ सब जीते जीके झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये । जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से क़ज़िये पाक हुये ॥ ३ ॥ या मस्त शराबी रिन्द हुये या ज़ाहिद ना मक़दूर हुये । या पीपी कर दिलशाद हुये या चिल्लवन में मसरूर हुये ॥ जब उम्र के प्याले दोनों के आ साइत पर मामूर हुये । याँ माले तसबी टूर हुये वाँ साग़र शीशे चूर हुये ॥ सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये । जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से क़ज़िये पाक हुये ॥ ४ ॥ इस दुनियाँ के धन दौलत में गर शाह सुलेमाँ जाह चले । या ठहरे मीर वज़ीर आज़म या राजा बनकर आह चले ॥ मुंहँ देख अजल के लश्कर का सब लेकर घरकी राह चले । नहिं हाथी घोड़े सङ्ग गये नहिँ तख़्त छतर हमराह चले ॥ सब

जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये। जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से क़ज़िये पाक हुये ॥५॥ या हाकिम या महकूम हुये या आक़िल या माकूल हुये। या ख़ादिम या मख़दूम हुये या काहिल या मजहूल हुये॥ ज़रदार हुये सरदार हुये मरदूद हुये मक़बूल हुये। कुछ और न देखा आख़िर को सब अन्त इसी में धूल हुये॥ सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये। जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से क़ज़िये पाक हुये ॥ ६ ॥ कर बैर बख़ीली ज़हर हुये या बख़शिश में तिरियाक हुये। या नख़ल हुये पुर मेवों के या ख़ाली पातों ढाक हुये॥ या उम्र गुज़ारी अशरत में या सौ ग़म से ग़मनाक हुये। फल फूल भी खाये गुलशन के या गलियों के ख़ाशाक हुये॥ सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुये। जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से क़ज़िये पाक हुये॥ ७॥

फ़क़ीरों की सदा ।

बटमार अजल का आ पहुंचा टुक इसको देख डरो बाबा । अब अश्क बहाओ आँखों से और आहें सर्द भरो बाबा॥ दिल हाथ उठा इस जीने से बेबस में यार मरो बाबा । जब बाप के ख़ातिर रोते थे अब अपनी ख़ातिर रो बाबा ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा । अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥ १ ॥ अब जीने को तुम रुख़सत दो औ मरने को मेहमान करो । ख़ैरात करो एहसान करो या पुन्य करो या दान करो॥ या पूरी लड्डू बटवाओ या ख़ासा हलुवा नान करो । कुछ लुत्फ़ नहीं अब जीने का इस जीने को मेहमान करो॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा । अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥ २ ॥ दिल कूटो अपना जीने से अब और गले को मत काटो। अब चाट फ़ना की टुक चक्खो औ

खून किसी का मत चाटो ॥ धुन छोड़ो हिस्से बख़रे की औ भाजी अपनी तुम बाटो। नाकंद बछेड़े कूद चुके अब और दौलती मत छाटो ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥३॥ यह अस्प बहुत कूदा उछला अब कोड़ा मारो ज़ेर करो। जब माल एकट्ठा करते थे अब तनका अपने ढेर करो ॥ गढ़ टूटा लश्कर भागचुका अब म्यानमें तुम शम्शेर करो। तुम साफ़ लड़ाई हार चुके अब भागने में मत देर करो ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाजचुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥ ४ ॥ सर काँपा चाँदी बाल हुये मुहँ फैला पलकें आन झुकीं। कद टेढ़ा कान हुये बहिरे औ आँखें भी चुंधि-आय गईं ॥ सुख नींद गई औ भूख घटी दिल सुस्त हुआ आवाज़ मद्दीं। जो होनी थी सो हो गुज़री अब चलने में कुछ देर नहीं। तन सूखा

कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा । अब मौत नक़ार बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥ ५ ॥ यह पाँवँ घसिट कर चलने से मत रस्ते को हैरान करो । औ पोपले मुहँ से रोटी को मत मल २ कर हलकान करो ॥ अब आप हुये तुम पानी से मत पानी का नुक़सान करो । कुछ लाभ नहीं है जीने में अब मरने से पहचान करो ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा । अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥६॥ गर अच्छी करनी नेक अमल तुम दुनियाँ से ले जाओगे । तो घर भी अच्छा पाओगे औ सुख से बैठ के खाओगे ॥ औ ऐसी दौलद छोड़के तुम जो ख़ाली हाथों जाओगे । कुछ नहीं बन आवेगी घबराओगे पछताओगे ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा । अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा ॥ ७ ॥ यह उम्र जिसे तुम समझे हो यह

हरदम तन को चुन्ती है। जिस लकड़ी के बल बैठे हो दिनरात यह लकड़ी घुन्ती है॥ तुम गठरी बाँधो कपड़े को औ देख अजल सर धुन्ती है। अब मौत कफ़न के कपड़े का ह्याँ ताना बाना बुन्ती है॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा॥ ८॥ घरबार रूपये पैसे में मत दिल को तुम खुर्सन्द करो। या गोर बनाओ जङ्गल में या जमुना पर आनन्द करो॥ मौत आन लुटारेगी आख़िर कुछ मक्र करो या फ़न्द करो। बस खूब तमाशा देख चुके अब आँखें अपनी बन्द करो॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा॥९॥ यह ऊँट कड़ाई का यारो संटूक़ जनाज़ा अर्थी है। जब इस पर हो असवार चले फिर घोड़ा है न हस्ती है॥ किस नींद पड़े तुम सोते हो यह बोझ तुम्हारा भारी

है। कुछ देर नहीं अब आह नज़ीर तैयार खड़ी असवारी है॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा। अब मौत नक़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा॥ १०॥

दर मज़म्मत दुनायदूँ।

यह पीठ अजब है दुनियाँ की औ क्या २ जिन्स एकट्ठी है। याँ माल किसी का मीठा है औ चीज़ किसी की खट्टी है॥ कुछ पक्का है कुछ भुन्ता है पकवान मिठाई पट्टी है। जब देखा खूब तो आख़िर को न चूल्हा भाड़ न भट्टी है॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है॥१॥ कोइ नाज ख़रीदे हँसहँस कर कोइ तख़्त खड़ा बनवाता है। कोइ कपड़े रंगों पहिने है कोइ गुदड़ी ओढ़े जाता है॥ कोइ भाई बाप चचा नाना कोइ नानी पूत कहाता है। जब देखा खूब तो आख़िर को न रिश्ता है न नाता है॥ गुल शोर

बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ का यह धोखे की सी टट्टी है ॥२॥ कोइ फूल के बैठे मसनद पर कोइ रोवे अपनी दौलत दो। कोइ बोले अपना मुझ से लो औ मेरा हो सो मुझ को दो ॥ कोइ लड़ता है कोइ मरता है कोइ झगड़े हक़ पर नाहक़ को। जब देखा खूब तो आख़िर को कुछ लेना एक न देना दो ॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है ॥३॥ रम्माल नजूमी आमिल है औ फ़ाज़िल मुल्ला स्याना है। कोइ आक़िल कामिल दाना है कोइ मत पड़ा दीवाना है ॥ तावीज़ फ़लीता फ़ाल फ़ूं औ जादू मन्तर लाना है। जब देखा खूब तो आख़िर को सब हीला मक्र फ़ेसाना है॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है ॥४॥ कोइ लोटे कूंचे ग-

लिधों में तैयार किसी का डेरा है। कोइ बाग़ कुंआ बनवाता है और घेर किसी ने घेरा है ॥ नित किसे झगड़े रहते हैं यह मेरा है यह तेरा है। जब देखा ख़ूब तो आख़िर को न मेरा है न तेरा है ॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है ॥५॥ कोइ टोपी टोप बनाता है कोइ बाँध फिरे इमामा है। कोइ साफ़ बरहना फिरता है न कपड़ा न पैजामा है ॥ किमख़्वाब गज़ी औ गाढ़े का नित किस्सा है हंगामा है। जब देखा ख़ूब तो आख़िर को न पगड़ी है न जामा है ॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है। हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है ॥६॥ अब किसका रंग बुरा कहिये औ किसका रंग भला कहिये इक दम की पीठ लगी है यह अम्बोह मज़ा चर्चा कहिये ॥ यह सैर तमाशे देख नज़ीर अब जा कहिये बिजा

कहिये । कुछ बात नहीं बन आती है चुपचाप पहेली क्या कहिये ॥ गुल शोर बबूला आग हुआ औ कीचड़ पानी मिट्टी है । हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है ॥ ७ ॥

ख़मसा ।

जितने तु देखता है यह फल फूल पात बेल ।
सब अपने २ काम के हैं कर रहे झमेल ॥
नाता है याँ सो नाथ जो रिश्ता है सो न केल ।
जो ग़म पड़े सो उसको तु अपनेही तन प झेल ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥ १ ॥
यह सूरतें जो देखे है मत इनसे दिल लगा ।
बरें यह सूतियाँ इन्हें ऐ यार मत जगा ॥
शजरा कुलाह फेंक उड़ा दे झका लगा ।
आगे को छोड़ नाथ न पीछे को रख पगा ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥ २ ॥

जब तू हुआ फ़क़ीर तो नाता किसी से क्या ।
छोड़ा कुटुम तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या ॥
मतलब भला फ़क़ीर को बाबा किसी से क्या ।
दिलबर को अपने छोड़के मिलना किसी से क्या ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥३॥
तेरी न यह ज़मीन है नहिं तेरा आसमाँ ।
तेरा न घर न बार न तेरा यह जिस्मों जाँ ॥
उसके सिवा कि जिस प हुआ तू फ़क़ीर याँ ।
कोई तेरा रफ़ीक़ न साथी न मेहरबाँ ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिरसे खेल ॥४॥
देता है दिलको अपने तो दे उस किसीको हात ।
जिस यार से कि हो तेरे जीते मुये का सात ॥
औ यह जो तुझसे करतेहैं मिल२के मीठीबात ।
मारा पड़ेगा देख न खा इनकी आतघात ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिरसे खेल ॥५॥

यह उलफ़तें कि साथ तेरे आठ पह्र हैं ।
यह उलफ़तें नहीं हैं मेरे यार क़ह्र हैं ॥
जितने यह शह्र देखे हैं जादू के शह्र हैं ।
जितनी मिठाइयाँ हैं भरे इसमें ज़ह्र हैं ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥६॥
ख़ूबाँ के यह जो चाँद से मुहँ पर खुले हैं बाल ।
मारा है तेरे वासते सैयाद ने यह जाल ॥
यह बाल बाल अब है तेरे जान का वबाल ।
फाँसियो ख़ुदा के वासते इसमें न देख भाल ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥७॥
जिसका है तू फ़क़ीर उसी को समझ तु यार ।
माँगे तो माँग उसीसे क्या नक़्द क्या उधार ॥
देवे तो ले वही जो न देवे तो दम न मार ।
उसके सिवा किसी से न रख अपना कारोबार ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥८॥

दुनियाँ इसे न जान यह दरियाय लहरदार ।
लाखों में इससे कोई उतरकर हुआ न पार ॥
जब तू बहा तो फिर न मिलेगा तुझे किनार ।
मल्लाह याँ न नाव न बल्ली है मेरे यार ॥
गर है फ़क़ीर तो तू न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥९॥
दुनियाँ न कह इसे यह तिलस्मात है मियाँ ।
यह जानवर यह बाग़ यह गुलज़ार यह मकाँ ॥
शक्लें जो देखता है यह जादू की हैं अयाँ ।
सब कुछ तेरे तईं हैं यह धोखे की टट्टियाँ ॥
गर है फ़क़ीर तो तू न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥१०॥
क्या फ़ायदा अगर तु हुआ नाम का फ़क़ीर ।
होकर फ़क़ीर तो भी रहा जाल में असीर ॥
ऐसाही था तो फ़क़्र को नाहक़ किया असीर ।
हम तो इसी सखुन के हैं क़ायल मियाँनज़ीर ॥
गर है फ़क़ीर तो तु न रख याँ किसी से मेल ।
याँ तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर से खेल ॥११॥

सख़ावत के बयान में।

ज़रदार है तो हरगिज़ मत मार अपने मनको।
तनज़ेब तनसुखों से तरसा न अपने तनको ॥
जो नर चलन चलें सब चल तू भी उस चलनको।
मुर्शिद का है यह नुक्ता रखयाद इससखुनको ॥
दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रखकफ़नको ॥
जा बैठ मैकदों में सब दर्दोग़म से हटकर ।
झमका गुलाबी मैके प्याले उलटपलटकर ॥
महबूब दिलवरों से खुश हो लिपटलिपट कर।
पी दूध और बताशे मेवे मिठाई चटकर ॥
दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रखकफ़नको ॥
यह न्यामतें हैं जितनी जोकुछ मिलेसोखाजा।
ताश और बादले में इकबार जगमगा जा ॥
पापी बख़ील मत बन दाता सखी कहा जा ।
इकदम तु अपना डङ्का मनमानता बजा जा ॥

दिल के खुशी के ख़ातिरचखडालमालधनको ।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रखकफ़नको ॥
सन्दूक़ में जो ज़र है उसको भी ले गँवा दे ।
मैके बहा के नाले तबलों को खड़खड़ा दे ॥
कोठे मकाँ हवेली सब खोद के खिला दे ।
कड़ियों तलक जला दे ईंटों तलक उड़ा दे ॥
दिल के खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको ।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रखकफ़नको ॥
जो २ बख़ील कुट्टन ज़र छोड़ कर मरेगा ।
या खायगा जँवाई या ख़ालसा लगेगा ॥
तेरा वही है जो कुछ राहे खुदा में देगा ।
खाना खिलाना हँसना तू भी सदा रहेगा ॥
दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको ।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रखकफ़नको ॥
गर आपड़ेगा तुझ पर कुछ हादिसाख़ललका ।
मालिक फिर और कोई ठहरेगा तेरे दिलका ॥
आगे से दे दिलाके हो रह तु उसे हलका ।
कर फ़िक्र अपने दिलमें कुछ आजकानकलका ॥

दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रख कफ़नको॥
जिसने यह ज़र दिया है फिर भी वह तुझको देगा।
मालो मकाँ हवेली बाग़ो चमन भी देगा॥
जीता रहेगा जबतक खाने को अन भी देगा।
मरजायगा तो वहि फिर कफ़न भी तुझको देगा॥
दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको।
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रख कफ़नको॥
जितने गड़े दबे हैं सब खा ले औ खिला ले।
रख धुन खुशी की दिलमें अब खाले औ खिलाले।
अपना समुझ उसीको जब खाले औ खिलाले।
अब तो नज़ीर तू भी सब खाले औ खिलाले॥
दिलके खुशी के ख़ातिर चखडालमालधनको॥
गर मर्द है तु आशिक़ कौड़ी न रख कफ़न को।

ऐक २५ सन १८६७ के
अनुसार इस किताब को
रजिस्टरी हुई है।